पद १२

(राग: दुर्गा - ताल: धुमाळी) 🦠

विसरूं जिर या चरणा हे प्रभो, तिर द्यावें मरणा, हे प्रभो। देह पड़ो दुर्मरणचि येवो, न करूं तव स्मरणा, हे प्रभो।।धु.।। शतमख जिर केलों विधिने, वेद स्तविजेलों विधिनें। धीश सुरेश महेशिह झालों, पिर पावो पतना, हे प्रभो, जिर न करूं नमना हे प्रभो।।१।।

परसिद्ध्या वळल्या आपणचि, गुरुपद मज आलें आपणचि। योग जळो आणि ज्ञान जळो तें, जी न करी भजना, झड़ दे ती रसना।।२।। रौरव नरक घडो या देहींच, मुखि बहु कृमी पडो या देहींच। निंदा जिर करूं निजगुरुस्थाना। आणि डोलवूं माना, हे प्रभो, नरककूप कानां भो हरि॥३॥ टाकुनि गुरुमंत्रा कुमतिनें, पूजूं सुरयंत्रा सुमतिनें। माणिक माणिक हा जप सोडुनि, आणिक धरूं ध्याना। न्यावेयमसदना, हे प्रभो।।४॥ सेवक हा तुमचा हो प्रिय, बोला मुखें, 'आमुचा हो प्रिय।' ज्ञानरूप मार्तांडस्वरूपीं, अभेदमति जड़ं द्या। सेवा ही घड़ द्या हे प्रभो॥५॥